International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 07-02-2022, Accepted: 21-02-2022, Published: 10-03-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 12-14

मूल्य शिक्षाः सफल जीवन की आधारशिला

शुचि अरोरा
सहा. प्राध्यापक, डॉ. विजय लाल स्मृति महाविद्यालय दमोह, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
भारतीय संस्कृति संपूर्ण ब्रह्मांड में अनुकरणीय हैं। मूल्य शिक्षा किसी भी समाज एवं राष्ट्र को अनेक प्रकार की बुराइयों, हिंसा, भ्रष्टाचार तथा उत्पीड़न के खिलाफ आधार प्रदान करती है। किसी भी सभ्य समाज के लिए शिक्षा "प्राण" है तथा मूल्य उसकी "आत्मा"है,शिक्षा वह शस्त्र है जो व्यक्ति को बंधन मुक्त कर वैचारिक शक्ति प्रदान करती है। मूल्य– शिक्षा किसी भी व्यक्ति,समाज एवं राष्ट्र के विकास का मुख्य आधार होती है,मूल्य वास्तव में मानव–अस्तित्व एवं व्यक्तित्व के मूलाधार होते हैं।मूल्य;मानव जीवन की आधारशिला है जिसके द्वारा समाज में उसका अस्तित्व होता है। मूल्यों को यदि जीवन कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।मानव जीवन में मूल्यों का समावेश होने से जीवन शांतिपूर्ण स्थायित्व से परिपूर्ण हो जाता है वही मूल्य उत्तम होते होते हैं, जो "सत्यम शिवम सुंदरम"की भावना से ओतप्रोत हो हमारे जीवन को उपयोगी एवं सुखदाई बनाने में मूल्यों का महत्व अतुलनीय है। वर्तमान परिस्थिति में शनैः शनैः इन जीवन–मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है जिसका दुष्परिणाम संपूर्ण समाज के लिए एक यक्ष प्रश्न बन गया है।
प्रस्तुत शोध पत्र में मूल्य शिक्षा की अवधारणा, वर्गीकरण, मूल्यों का जीवन में महत्व,आवश्यकता और जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना करने के लिए नीतिगत प्रयासों की आवश्यकता पर विस्तार से चर्चा की गई है। जीवन मूल्यों को स्थापित करने हेतु विभिन्न विधियों से संबंधित समस्याएं क्या हो सकती है, किस प्रकार से व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का समावेश कर सफल जीवन की आधारशिला रखी जा सकती है; इस बात की पुष्टि की गई है। शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य कुछ महत्वपूर्ण सुझावों को देना है जिससे कि व्यक्ति का भावी जीवन मूल्यवान हो सके।

मूल शब्दः भारतीय संस्कृति, शिक्षा, जीवन मूल्य, समाज, व्यक्ति व्यवहार, आधारशिला आदि

प्रस्तावना
संपूर्ण ब्रह्मांड में भारतीय संस्कृति का स्थान सर्वोच्च है, क्योंकि यही ऐसी एकमात्र संस्कृति है जो शिक्षा के समानांतर जीवन मूल्यों को सर्वोपरि रखती है जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति एक नेक इंसान बन सके। एक सफल व्यक्ति बनने के लिए सिर्फ उच्च शिक्षा ही पर्याप्त नहीं वरन् ऐसी शिक्षा अनिवार्य है जो "मूल्य आधारित" हो। किसी भी सभ्य समाज के लिए शिक्षा "प्राण" हैं तथा जीवन मूल्य उसकी "आत्मा"; मूल्यों का संबंध जीवन के दृष्टिकोण से है जीवन की प्रारंभिक पाठशाला व्यक्ति का "परिवार"है, पारिवारिक संस्कृति एवं पारिवारिक मूल्य व्यक्ति के जीवन में गहरी छाप छोड़ते हैं तथा उसके भविष्य निर्माण में सहायक होते हैं। भविष्य में यही व्यक्ति उच्च पद पर आसीन होकर देश की दशा एवं दिशा तय करते हैं किंतु वर्तमान परिपेक्ष्य में मूल्यों की कमी के कारण अत्यंत गंभीर संकट की स्थिति परिलक्षित हो रही है। प्राचीन काल में बालक परिवार से ही मूल्यों की शिक्षा लेना प्रारंभ कर देता था,बालक प्रायरू संयुक्त परिवारों का हिस्सा हुआ करते थे,परिवारजनों के पास बालक के लिए ना तो समयाभाव था ना ही अन्य कोई विशेष कारण था कि वह बालक की परवरिश हेतु उसे परिवार के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भेजें किंतु बदलते परिवेश में संयुक्त परिवारों का स्थान एकाकी परिवारों ने ले लिया है परिवार के प्रत्येक सदस्य आर्थिक उन्नति हेतु अपने–अपने निजी कार्यों में व्यस्त हैं फलतरू बालक को परिवार जन अभीष्ट समय नहीं दे पा रहे हैं जिसकी उसे महती आवश्यकता है, परिणाम स्वरूप बालक के प्रारंभिक जीवन काल में परिवार से मिलने वाली मूल्य शिक्षा में उत्तरोत्तर कमी आ रही है।
पूर्व बाल्यावस्था से आगे बढ़कर जब बालक विद्यालय में प्रवेश करता है तब समझिए कि वह आधुनिकता के क्षेत्र में प्रवेश कर रहा है क्योंकि आज की शिक्षा, प्राचीन काल में दी जाने वाली शिक्षा से पूर्णतारू भिन्न है। प्राचीन काल की शिक्षा का आधार ही "मूल्य शिक्षा" था। शिक्षा का परम उद्देश्य बालक को "मूल्यवान व्यक्ति"बनाना था, जो कि जीवन के परम सत्य को जानने वाले हो सके किंतु वर्तमान शिक्षा का आधार "तकनीकी शिक्षा" है, आज शिक्षा का परम उद्देश्य बालक को "आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाना" है।शिक्षा में हुए मूल्यों के विघटन के कारण आज व्यक्ति लक्ष्य हीन होता जा रहा है वह विश्वविद्यालयों की बड़ी–बड़ी उपाधियां लाकर भी जीवन– जगत के अंतिम सत्य तथा आत्मा–परमात्मा की सही धारणाएं नहीं समझ पाता। शिक्षा में समग्रता का अभाव होने के कारण बालक की योग्यताओं, सृजनात्मकता एवं जिज्ञासा का समुचित मूल्यांकन नहीं हो रहा है।
चिंतन का विषय यह है कि मूल्य जो मानव के पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को निर्धारित करते हैं क्या उनका परीक्षण–निरीक्षण आवश्यक है? तो कहना होगा अवश्य ही है; मूल्य जो आज के परिपेक्ष्य में धूमिल से दृष्टिगोचर हो रहे हैं इनकी पारिवारिक क्षेत्र में एवं शिक्षा के क्षेत्रों में गुणवत्ता को बढ़ाने की महती आवश्यकता है तभी व्यक्ति, समाज एवं देश का विकास संभव है।

शोध पत्र के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नांकित उद्देश्यों पर आधारित है–

1. बालकों में पारिवारिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना।
2. वर्तमान में मूल्य शिक्षा का पाठ्यक्रम की वरीयता श्रेणी में उचित स्थान सुनिश्चित करना।
3. जीवन–जगत् में मूल्य–शिक्षा का महत्व सर्वोपरि है, इस बात की पुष्टि करना।
4. जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना हेतु किए जा रहे प्रयासों की विवेचना करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीय समंको तथा संदर्भ ग्रंथों, शोध पत्रों, प्रकाशित लेखों एवं अन्य समाचार पत्र पत्रिका से प्राप्त जानकारियों पर आधारित है।

मूल्य का अर्थ

मूल्य के लिए अंग्रेजी में Value शब्द का प्रयोग किया जाता है, Value शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के "अमसमतम" से हुई है जिसका तात्पर्य; महत्व उपयोगिता या वांछनीयता से लगाया जा सकता है। मनुष्य किसी वस्तु, क्रिया या विचार को अपनाने से पहले यह निर्णय करता है कि वह उसे अपनाए या त्याग दें ऐसा विचार भाव व्यक्ति के मन में निर्णयात्मक ढंग से आता है तो वह मूल्य कहलाता है।

डॉ नागेंद्र के अनुसार– मूल्य शब्द पदार्थ के आंतरिक गुणों का नाम है जिसके कारण लोग जीवन में उसका महत्व या मान होता है।

जॉन्स के अनुसाररू मूल्य वह प्रेरणा है, जो व्यक्ति के प्रयासों को संतुष्ट करती है जिससे वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

मैनी (2005) के अनुसार– देश काल परिस्थिति के संदर्भ में जन सामान्य मान्यताएं ही मूल्य बन जाती हैं मूल्य, अभिवृत्तियां एवं आदर्श हमारे व्यवहार को निर्देशित करते हैं।

हमारे व्यवहार का नियंत्रण करने में मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है ।यह अभिप्रेरणा को शक्ति देते हैं, आवश्यकताओं की संपुष्टि के स्वरूप को निर्धारित करने में निर्णायक का कार्य भी करते हैं। व्यक्ति सहयोगी स्वभाव के होंगे या असहयोगी,सहनशील होंगे अथवा उग्र,उत्साही या भयभीत प्रवृत्ति के यह उनके विचारों पर ही निर्भर नहीं करता वरन् यह व्यक्ति के मूल्यों द्वारा उनके स्थाई भाव तथा अर्चित परिमार्जित मूल्य प्रवृत्तियों के द्वारा निश्चित होता है।समाज में व्याप्त समस्त मूल्य हमारे व्यक्तित्व के विकास एवं चरित्र निर्माण की दृष्टि से वांछनीय एवं उपयोगी होते हैं। मूल्य–शिक्षा अपने आप में एक व्यापक एवं विवादग्रस्त धारणा है;व्यापक इसलिए क्योंकि मूल्यों को सूचीबद्ध किया जाना वहृद कार्य है एवं विवादग्रस्त इसलिए क्योंकि मूल्य शिक्षा के संबंध में स्वयं मूल्यविदो् में एकमतता नहीं है अर्थात मूल्य– शिक्षा से तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है जिसमें विशेष रूप से मूल्यों पर बल दिया जाता है शिक्षा के समस्त अंग जैसे पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां, उद्देश्य, शिक्षक, छात्र आदि सभी मूल्यों का संवर्धन करने में तत्पर हो।

मूल्यों का वर्गीकरण

मूल्यों का वर्गीकरण विभिन्न विद्वानों ने भिन्न –भिन्न प्रकार से किया है–

- पैरी ने मूल्यों को नकारात्मक, सकारात्मक, विकासवादी, वास्तविक आदि श्रेणी में विभाजित किया है।
- कुछ अन्य विद्वानों ने मूल्यों को सुखवादी, सौंदर्यवादी, धार्मिक, आर्थिक, नैतिक तथा तार्किक मूल्यों में बांटा हैं।
- अल्पोर्ट और वर्नन ने मूल्यों को स्प्रिंगर के वर्गीकरण के आधार पर छह श्रेणियों में विभाजित किया है–सैद्धांतिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौंदर्यात्मक मूल्य,सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य।
- शर्मा, अंजना, जे.ई.टनर के अनुसार मूर्त मूल्य (विचारगत रुचियां), अमूर्त मूल्य ((वस्तुगत रुचियां)।
- सिंह अंकन के अनुसार मूल्य विभाजन इस प्रकार है–एजैविक मूल्य , पराजैविक मूल्य एवं सामाजिक मूल्य।

इस वर्गीकरण के अतिरिक्त भारत में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली (एनसीईआरटी) ने जो मूल्यों की सूची जारी की है वह बड़ी लंबी है तथा उनके द्वारा दर्शाए गए मूल्यों की सूची में 83 मूल्य बताए गए हैं यदि इन मूल्यों का श्रेणीकरण करें तो सूची निम्नानुसार होगी– व्यक्तिक, शैक्षिक, सामाजिक ,चारित्रिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक तथा सौंदर्यात्मक ।

मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता

मूल्य आधारित शिक्षा से तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है जिसमें विशेष रूप से मूल्यों पर बल दिया जाता है, हमारे जीवन को सुखदाई बनाने के लिए मूल्यों की महती आवश्यकता है। आज के परिवर्तनशील युग में मूल्य आधारित शिक्षा का मुख्य बिंदु यह नहीं है कि मूल्यों की एक लंबी सूची बना ली जाए और उसे बिना समझे–बुझे स्वीकार कर लिया जाए अपितु मूल्यों का मूल्यांकन विशेष रूप से व्यक्तिगत, सामाजिक, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में किया जाना चाहिए। वर्तमान में हमारी युवा पीढ़ी एवं समस्त जन मानस वैज्ञानिक, भौतिकवादी तथा अस्तित्ववादी विचारों के प्रभाव में आकर हमारे भारतीय आदर्शों, मूल्य तथा मान्यताओं को भुलाकर पाश्चात्य जीवन शैली को आत्मसात करने में लगी हुई है। हमारे भारतीय शाश्वत सनातन मूल्य शिथिल पड़ते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में इस बात की आवश्यकता अनुभव की जा रही है कि मूल्य आधारित शिक्षा का ऐसा स्वरूप तैयार किया जाए जिसके द्वारा समाज का प्रत्येक व्यक्ति मूल्यवादी मान्यताओं से संपन्न होकर प्राचीन भारतीय शाश्वत मूल्यों का आधुनिकता के साथ समन्वय करते हुए आगे बढ़ सके ।आज दिन–प्रतिदिन हमारा समाज मूल्यहीन दिखाई पड़ रहा है जो एक ज्वलंत चिंता का विषय है आज भारत की भावी पीढ़ी को ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो उन्हें शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक रूप से मजबूत बनावे। बालक की शैशवास्था में यह

जिम्मेदारी अभिभावकों की है कि वे प्रारंभिक स्तर पर ही मूल्यपरक शिक्षा के बीज बालक में बो देवे तत्पश्चात बाल्यावस्था में जब बालक विद्यालयी शिक्षा लेना प्रारंभ करता है तब मूल्य परक शिक्षा देने का कार्यभार विद्यालय परिवार का होता है किंतु यहां प्रश्न यह उठता है कि बालक को दी जाने वाली शिक्षा की प्रकृति किस प्रकार की हो? आज आवश्यकता मूल्यपरक शिक्षा की है, ना कि पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने हेतु शिक्षा की। स्वयं शिक्षकों के व्यवहार में मूल्य परीक्षित हो यह अपेक्षा भी समाज, शिक्षकों से रखता है। उच्च शिक्षा स्तर पर भी पाठ्यक्रम इस प्रकार का होना चाहिए कि विद्यार्थी मूल्यों की राह से ना भटके अर्थात् जब तक एक व्यक्ति शिक्षा ग्रहण कर रहा है उसकी शिक्षा में मूल्य शिक्षा का स्थान सर्वोपरि ही होना चाहिए तभी उसके शिक्षित होने का महत्व सार्थक होगा।

मूल्य शिक्षा के संदर्भ में भविष्यगामी सुझाव

पारिवारिक वातावरण मूल्यों के प्रति सजग बना रहे प्रारंभिक स्तर पर मूल्य परख शिक्षा बालक को मिलना प्रारंभ हो जानी चाहिए जिसकी पूरी जवाबदारी परिवार जनों की रहती है। अनुसंधानों से पता चलता है कि मूल्यपरक माता–पिता की संताने प्रायरू मूल्यवान व्यक्तियों के रूप में अपनी पहचान बनाती है।

नई शिक्षा नीति (2020) से यह अपेक्षा है कि वे विद्यार्थियों को यथार्थ जीवन से परिचित करा उन्हें सफल रूप से जीवन जीने की कला सिखाने में खरी उतरे अर्थात् मूल्यपरक जीवन के सिद्धांतों से अवगत कराएं ताकि हमारे देश के युवा मूल्यवान बनकर स्वयं के जीवन को एवं समाज को भी गौरवान्वित करें।

भावी पीढ़ी में मूल्यों के विकास के लिए प्रशिक्षण संस्थाओं के कार्यक्रमों में मूल्य शिक्षण को अनिवार्य किया जाना चाहिए।शिक्षक प्रशिक्षकों को इस बात का प्रयास करना चाहिए कि प्रशिक्षणार्थियों में अधिक–से– अधिक मूल्य विकसित हो सके ताकि जब वे प्रशिक्षणार्थी, शिक्षक बनकर समाज की सेवा करें; तब एक स्वस्थ समाज के निर्माण में वे अपना योगदान दे सकें।

समाज में भी समय–समय पर कुछ इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए जिससे व्यक्तियों में मूल्यपरक सोच विकसित होवे।

राष्ट्रीय स्तर पर भी मूल्यपरक व्यक्तियों का सम्मान होना चाहिए जिन्हें आदर्श रूप में मानकर जनसाधारण उनसे प्रेरित हो।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में शिक्षा पद्धति और मूल्यों में कोई समन्वय दृष्टिगोचर नहीं होता है, यह सर्वविदित है आज व्यक्ति सुशिक्षित है,उच्च पद पर विद्यमान हैं, अपनी भौतिक सुख– सुविधाओं में निर्लिप्त है किंतु स्वयं के अस्तित्व को ही नहीं समझ पा रहा। मूल्यों के अभाव में जीवन में आने वाली समस्याओं से भयभीत होकर व्यक्ति अवसाद के गर्त में जा रहा है। मूल्य विहीन मानव–जीवन की कल्पना शून्य समान है। व्यक्ति के जीवन में मूल्यों की नींव शैशवावस्था से ही रखना प्रारंभ कर देना चाहिए ।शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान पर आधारित ना होकर वास्तविक जीवन की गहराई को समझने वाली होनी चाहिए और यह तभी संभव है जब शिक्षा मूल्यपरक होगी। सफल जीवन हेतु व्यक्ति शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए अर्थात् केवल भौतिक रूप से संपन्नता, सफल व्यक्ति का परिचय नहीं देती। मूल्यवान व्यक्ति ही सही मायनों में सफल जीवन का निर्वहन करते हैं एवं दूसरों के जीवनों में भी प्रेरणा का स्रोत बनते है और तभी समाज एवं राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ खुमेश सिंह ठाकुर एवं डॉ.जी. एल.मालवीय "उच्च शिक्षा के गुणवत्ता विकास में मूल्यों की शिक्षा की प्रासंगिकता" फरवरी 2015
2. मैनी,डी. (2005) "मानव मूल्य परक शब्दावली का विश्वकोश" खंड पंचम प्रकाशक प्रभात कुमार शर्मा द्वारा स्वरूप एंड संस नई दिल्ली।
3. पांडेय, आर. (2000) "मूल्य शिक्षा के परिपेक्ष्य" लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. पेरी और सक्सेना, एन.आर स्वरूप (2005) "शिक्षा के सिद्धांत" आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार (शिक्षा विभाग) नई दिल्ली, पृष्ठ १६
6. मूल्य विमर्श पत्रिका, मानवीय मूल्य अनुशीलन केंद्र, हिंदू विश्वविद्यालय काशी, पृष्ठ 16
7. मूल्य शिक्षा ,भारतीय शिक्षण मंडल, नागपुर
8. नायक, गोपाल प्रसाद (2009) "मूल्यों के विकास में शिक्षण संस्थानों की भूमिका"परिपेक्ष्य16 ,अंक 3 दिसंबर ।
9. महेश चंद्र शर्मा, "नैतिक शिक्षा अनिवार्य हो", दिल्ली पब्लिकेशन।
10. Sharman] Importance of value based education (Golden lecture series) UGC.
11. गुप्त, डॉ. नत्थू लाल, " संस्कृति और मानव मूल्य परिशोध"चंडीगढ़, पंजाब विश्वविद्यालय, अंक 51
12. सक्सेना, एन.आर. स्वरूप "शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत" मेरठ, लाल बुक डिपो (2011).